

Master of Arts (History) (MAHI)

MHI-105 : History of Indian Economy-1 from the Earliest time to C.E. 1700

IMPORTANT QUESTIONS FOR DECEMBER 2024

MUST WATCH TO SCORE GOOD MARKS

PART-2

Discuss the factors that determined the agrarian environment of the Indian subcontinent.

The agrarian environment of the Indian subcontinent has been influenced by several factors:

1. **Climate:** The tropical and subtropical climate in India, along with its monsoon patterns, determines the cropping seasons. The summer monsoon (June-September) brings rainfall that supports Kharif crops, while the winter (rabi) season is dependent on cooler and drier conditions.

जलवायु: भारत का उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु, साथ ही उसका मानसूनी पैटर्न, कृषि मौसमों को निर्धारित करता है। ग्रीष्मकालीन मानसून (जून-सितंबर) वर्षा लाता है, जो खरीफ फसलों का समर्थन करता है, जबकि सर्दी (रबी) मौसम ठंडे और शुष्क परिस्थितियों पर निर्भर होता है।

2. **Soil Types:** India has a variety of soils like alluvial, black, red, and laterite, which are suitable for different crops. Alluvial soils are found in river basins and are ideal for rice, while black soils are good for cotton cultivation.

मृदा प्रकार: भारत में विभिन्न प्रकार की मृदाएँ हैं जैसे कि ऐल्यूवियल, काली, लाल और लेटराइट, जो विभिन्न फसलों के लिए उपयुक्त हैं। ऐल्यूवियल मृदाएँ नदियों के बेसिन में पाई जाती हैं और चावल के लिए आदर्श हैं, जबकि काली मृदा कपास की खेती के लिए उपयुक्त है।

3. **Water Resources:** The availability of water through rivers, canals, and groundwater is crucial for agriculture. The Indus, Ganges, and Brahmaputra basins are major water sources for irrigation.

जल संसाधन: नदियों, नहरों और भूमिगत जल के माध्यम से जल की उपलब्धता कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिन सिंचाई के लिए प्रमुख जल स्रोत हैं।

4. **Topography:** The physical landscape, such as the fertile plains of the Ganga and Indus rivers, supports intensive agriculture, whereas the mountainous regions in the north are less conducive to large-scale farming.

भौतिक परिदृश्य: भौतिक परिदृश्य, जैसे गंगा और सिंधु नदियों की उपजाऊ मैदानी क्षेत्र, कृषि को बढ़ावा देते हैं, जबकि उत्तर के पहाड़ी क्षेत्र बड़े पैमाने पर खेती के लिए कम अनुकूल होते हैं।

5. **Cultural and Economic Factors:** Traditional farming practices, crop rotation, and the integration of livestock have shaped agriculture in India. Additionally, economic policies and government initiatives play a role in supporting agrarian practices.

सांस्कृतिक और आर्थिक कारक: पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ, फसल चक्रीकरण और पशुधन का उपयोग ने भारत में कृषि को आकार दिया है। इसके अतिरिक्त, आर्थिक नीतियाँ और सरकारी पहलें कृषि प्रथाओं को समर्थन देने में भूमिका निभाती हैं।

6. **Technological Advances:** The introduction of irrigation methods, modern machinery, and better seed varieties has improved agricultural productivity in many regions of the subcontinent.

प्रौद्योगिकीय उन्नति: सिंचाई विधियों, आधुनिक मशीनरी और बेहतर बीज किस्मों की शुरुआत ने उपमहाद्वीप के कई क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता में सुधार किया है।

What was the role of women in the production process during the medieval period.

The role of women in the production process during the medieval period was significant but often confined to traditional tasks within the household and rural economy:

1. **Agriculture:** Women played a crucial role in agriculture by helping with sowing, harvesting, and processing crops. They were involved in tasks like weeding, collecting water, and preparing food from harvested grains.

कृषि: महिलाओं का कृषि में महत्वपूर्ण योगदान था, जैसे बुआई, कटाई और फसलों की प्रसंस्करण में मदद करना। वे निराई, पानी एकत्र करना और कटाई से प्राप्त अनाज से खाना तैयार करने जैसे कार्यों में शामिल थीं।

2. **Handicrafts and Textiles:** Women were often responsible for weaving cloth, spinning yarn, and making garments. This was especially important in rural areas where they contributed to the production of textiles for local use.

हस्तशिल्प और वस्त्र: महिलाएं अक्सर कपड़ा बुनने, धागा कतने और कपड़े बनाने की जिम्मेदारी निभाती थीं। यह ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, जहां वे स्थानीय उपयोग के लिए वस्त्रों का उत्पादन करती थीं।

3. **Household Production:** In addition to agricultural work, women managed domestic production of items such as pottery, baskets, and other daily-use items, which were integral to household economies.

गृह उत्पादन: कृषि कार्य के अलावा, महिलाएं घरेलू उत्पादन का प्रबंधन करती थीं, जैसे बर्तन, टोकरी और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएं, जो घरेलू अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक थीं।

4. **Livestock Care:** Women took part in the care of livestock, such as milking cows, managing poultry, and providing for the well-being of animals, which was vital for food production and economic stability.

पशुपालन: महिलाएं पशुपालन में भाग लेती थीं, जैसे गायों का दूध निकालना, मुर्गी पालन करना और पशुओं की देखभाल करना, जो खाद्य उत्पादन और आर्थिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण था।

5. **Social and Economic Constraints:** Despite their significant contribution, women's roles in production were often restricted due to social and cultural constraints, limiting their participation in large-scale trade or decision-making processes.

सामाजिक और आर्थिक प्रतिबंध: उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, महिलाओं की भूमिकाएं अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिबंधों के कारण सीमित थीं, जिससे वे बड़े पैमाने पर व्यापार या निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग नहीं ले पाती थीं।

6. **Participation in Trade:** In some cases, especially in urban centers, women participated in trade and commerce, either by running small businesses or helping in local markets, but their roles were still largely subordinate.

व्यापार में भागीदारी: कुछ मामलों में, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, महिलाएं व्यापार और वाणिज्य में भाग लेती थीं, या तो छोटे व्यवसाय चलाकर या स्थानीय बाजारों में मदद करके, लेकिन उनकी भूमिकाएं अभी भी मुख्य रूप से अधीनस्थ होती थीं।

Examine briefly the land revenue system of the Mughals.

The land revenue system of the Mughals was a significant part of their administration and played a crucial role in supporting the empire's economy:

1. **Zabt System:** The Mughal land revenue system, known as the Zabt, was primarily based on the measurement of land and the assessment of crops. Revenue was fixed according to the fertility of the land, and the state claimed a share of the produce, generally one-third.

जब्त प्रणाली: मुगल भूमि राजस्व प्रणाली, जिसे जब्त कहा जाता है, मुख्य रूप से भूमि की माप और फसलों के मूल्यांकन पर आधारित थी। राजस्व भूमि की उर्वरता के अनुसार तय किया जाता था, और राज्य उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा लेता था।

2. **Revenue Collection:** The revenue was collected by officials known as *amils* or *khalisa* officers, who ensured the proper collection from peasants. The amount could vary depending on the region, crop, and time of year.

राजस्व संग्रहण: राजस्व को *अमिलया खलिसा* अधिकारियों द्वारा एकत्र किया जाता था, जो किसानों से उचित संग्रहण सुनिश्चित करते थे। राशि क्षेत्र, फसल और मौसम के आधार पर भिन्न हो सकती थी।

3. **Ain-i-Dahsala:** Akbar introduced the *Ain-i-Dahsala* system, where revenue was assessed based on the average production of crops over ten years. This helped in stabilizing the revenue collection, making it more predictable for both the state and the peasants.

ऐन-ए-दससाला: अकबर ने *ऐन-ए-दससाला* प्रणाली शुरू की, जिसमें राजस्व का मूल्यांकन फसलों के दस वर्षों के औसत उत्पादन के आधार पर किया जाता था। इसने राजस्व संग्रहण को स्थिर किया और राज्य और किसानों दोनों के लिए इसे अधिक अनुमानित बना दिया।

4. **Cash and Kind Payments:** Revenue could be paid in either cash or kind (goods). The peasants had to deliver a portion of their crops or cash equivalent to the state, depending on the region and the ruler's preferences.

नकद और वस्तु भुगतान: राजस्व नकद या वस्तु (सामान) के रूप में भुगतान किया जा सकता था। किसानों को अपनी फसलों का एक हिस्सा या नकद मूल्य राज्य को देना पड़ता था, जो क्षेत्र और शासक की प्राथमिकताओं पर निर्भर करता था।

5. **Land Classification:** The Mughal administration classified land into categories such as *barren*, *irrigated*, and *non-irrigated*, and tax rates were adjusted based on the land type and productivity.

भूमि वर्गीकरण: मुगल प्रशासन ने भूमि को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया, जैसे *बंजर*, *सिंचित* और *असिंचित*, और भूमि के प्रकार और उत्पादकता के आधार पर कर दरों को समायोजित किया।

6. **Impact on Farmers:** The Mughal land revenue system, although efficient, often burdened farmers with high taxes, leading to occasional revolts and unrest. However, it also helped in the empire's economic prosperity through organized collection and administration.

किसानों पर प्रभाव: मुगल भूमि राजस्व प्रणाली, हालांकि प्रभावी थी, अक्सर किसानों पर उच्च करों का बोझ डालती थी, जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी विद्रोह और अशांति होती थी। हालांकि, यह संगठित संग्रहण और प्रशासन के माध्यम से साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि में भी सहायक थी।